31-12-82 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

बापदादा की सर्व अलौकिक फ्रेंड्स को बधाई

खुदा दोस्त बापदादा अपने रूहानी मीत बच्चों प्रति बोले :-

“आज सर्व ब्राह्मण आत्माओं के मन के मीत , दिल के गीत, प्रीत की रीति निभाने के लिए वन्डरफुल रीति से रूहानी गुलाब-फूलों के बगीचे में वा अल्लाह अपने बगीचे में मिलने के लिए आये हैं। वैसे भी मीत कहो वा फ्रेंड्स कहो, बगीचे में मिलन मनाते हैं। ऐसा बगीचा सारे कल्प में मिल नहीं सकता। आज चारों तरफ के बच्चे इसी एक लगन में हैं कि हम भी अपने मन के मीत से यह ‘न्यू ईयर डे' मनावें। बापदादा आज सिर्फ साकारी स्वरूप में सन्मुख बैठे हुए रूहानी फ्रेंड्स से नहीं मिल रहे हैं लेकिन साकार सभा से, आकार रूपधारी बच्चों की वा मन के मीत स्नेही आत्माओं की बहुत बड़ी सभा देख रहे हैं। इतने रूहानी फ्रेंड्स, सच्चे फ्रेंड्स और किसको होंगे? बापदादा को भी रूहानी फखुर है कि ऐसे और इतने फ्रेंड्स न किसको मिले हैं न मिलेंगे। सबवे दिल का गीत दूर से वा समीप से सुनाई दे रहा है। कौन सा गीत? ओ बाबा! यही “बाबा बाबा" का गीत एक ही साज और राज़से चारों ओर से सुनाई दे रहा है। बच्चे कहो वा फ्रेंड्स कहो, सभी का एक ही बोल है - “तुम ही मेरे" और खुदा दोस्त भी एक-एक को यही कहते कि - “तुम ही मेरे। ‘वाह मेरे फ्रेंड्स।" गीत गाओ - (बहनों ने साकार बाबा का प्यारा गीत गाया, तुम्हीं मेरे.....)

यह मुख का गीत तो थोड़ा समय गा सकते लेकिन मन का गीत तो अविनाशी बजता रहता। आज के ‘न्यू इयर डे' पर अनेक बच्चों के बहुत अच्छे संकल्प, स्नेह के बोल बापदादा के पास पहले से पहुँच गये हैं। आज का दिन खुशियों का दिन मनाते हो ना! एक दो को बधाई देते हो। बापदादा भी सर्व मन के मीत अलौकिक रूहानी फ्रेंड्स को बधाई देते हैं।

सदा विधि द्वारा वृद्धि को पाते रहेंगे। सदा सर्व खजानों से सम्पन्न रहेंगे। सदा फरिश्ता बन सर्व के देह के रिश्तों से पार उड़ते रहेंगे। सदा नयनों में, दिल में बाप को समाते हुए, ‘एक बाप दूसरा न कोई' - इसी लगन में मगन रहेंगे। सदा आई हुई परीक्षाओं को, समस्याओं को, व्यर्थ संकल्पों को पानी पर लकीर के समान पार कर पास विद् आनर बनेंगे। ऐसी श्रेष्ठ शुभ कामनाओं से बधाई दे रहे हैं। एक एक अमूल्य रत्न की विशेषताओं के गीत गा रहे हैं। आज के दिन नाचते गाते हैं ना। सिर्फ आज नहीं लेकिन सदा नाचते और गाते रहो। सदा हरेक को एक अलौकिक गिफ्ट देते रहना। जैसे बड़े आदमी कहाँ जाते हैं वा उनके पास कोई आते हैं तो खाली हाथ न जाते हैं। आप सब भी बड़े ते बड़े बाप केबच्चे बड़े ते बड़े हो ना! कभी भी किसी भी ब्राह्मण आत्मा से वा किसी से भी मिलते हो तो कुछ देने के बिना कैसे मिलेंगे! हरेक को शुभभावना और शुभ कामना की गिफ्ट सदा देते रहो। विशेषता दो और विशेषता लो। गुण दो और गुण लो। ऐसी गाडली गिफ्ट सभी को देते रहो। चाहे कोई किसी भी भावना वा कामना से आये लेकिन आप शुभ भावना की गिफ्ट दो। शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना की गिफ्ट का स्टाक सदा भरपूर रहे। यह संकल्प मात्र भी उत्पन्न न हो कि आखिर भी कहाँ तक शुभ भावना से देखें। आखिर भी कोई हद है वा नहीं! यह संकल्प भी सिद्ध करता है कि इस गोल्डन गिफ्ट का स्टाक जमा नहीं है।

दाता, विधाता, वरदाता के बच्चे, भाग्य की लकीर खींचने वाले ब्रह्मा के बच्चे ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियाँ हो इसलिए सदा भण्डारा भरपूर रहे। इस वर्ष खाली किसको नहीं रहने देना। न खाली हाथ जाना, न खाली हाथ आना। सबको देना भी और सबसे लेना भी। यह गिफ्ट बाँटने का वर्ष है। सिर्फ एक दिन नहीं, लेकिन सारा वर्ष हर दिन, हर घण्टा, हर सेकण्ड, हर संकल्प जो बीता उससे और रूहानी नवीनता लाने वाला हो। नया दिन, नई रात तो सब कहते हैं लेकिन श्रेष्ठ आत्माओं का नया सेकण्ड, नया संकल्प हो तब ही आने वाली नई दुनिया की नई झलक विश्व की आत्माओं को स्वप्न के रूप में वा साक्षात्कार के रूप में दिखाई देगी। अब तक विश्व की आत्मायें जानने की इच्छुक हैं कि विनाश के बाद क्या होगा? नई दुनिया में क्या होगा? लेकिन इस वर्ष सर्व आधार स्वरूप आत्माओं का हर सेकण्ड, और हर संकल्प, नये ते नया, ऊँचे ते ऊँचा, अच्छे ते अच्छा रहे तो चारों ओर से नई दुनिया की झलक देखने का आवाज फैलेगा और क्या होगा इसके बजाये ‘ऐसे होगा'। ऐसी वन्डरफुल दुनिया जल्दी आवे और जल्दी तैयारी करें - इसमें जुट जायेंगे। जैसे स्थापना के आदि में स्वप्न और साक्षात्कार की लीला विशेष रही, ऐसे अन्त में भी यही विचित्र लीला प्रत्यक्षता करने के निमित्त बनेंगी। चारों ओर से “यही है, यही है", यही आवाज गूजेंगी और यह आवाज अनेकों के भाग्य की श्रेष्ठता के निमित्त होगा। एक से अनेक दीपक जग जायेंगे।

तो इस वर्ष क्या करना है? सच्ची दीपमाला मनाने की तैयारी करनी है। पुरानी बातें, पुराने संस्कार का दशहरा मनाओ। क्योंकि दशहरे के बाद ही दीपमाला होगी। तो आज मन के मीत आत्माओं से मन की बात कर रहे हैं। मन की बात किससे करते हैं? फ्रेंड्स से करते हो ना। अच्छा बधाई तो मिली। बधाई के साथ-साथ नये साल की सौगात भी सदा साथ रखना। कितनी सौगात चाहिए? एक एक में बहुत समाई हुई भी है ओर बहुत भी एक है। सबसे बढ़िया सौगात जो खजाना चाहो वह हाजर हो जायेगा। “डायमण्ड की" क्या है? एक तो बापदादा ने सब बच्चों को डायमण्ड की चाबी दी है जिससे एक ही बोल “बाबा"। इससे बढ़िया चाबी कोई मिलेगी-क्या? सतयुग में भी ऐसी चाबी नहीं मिलेगी। सब के पास यह “डायमण्ड की" सम्भाली हुई है ना! चोरी तो नहीं हो गई है ना! चाबी को खोया तो सब खजाने खोये। इसलिए चाबी सदा साथ रखना। ‘की-चेन है? वा अकेली चाबी है? “की"की चेन है - सदा सर्व सम्बन्धों से स्मृति स्वरूप होते रहो। तो ‘की-चेन' की गिफ्ट मिली ना। सबसे बढ़िया गिफ्ट तो है यह ‘चाबी'। उस के साथ-साथ वर्ष के लिए विशेष प्रतिज्ञा का कंगन भी दे रहे हैं। वह प्रतिज्ञा का कंगन क्या है? जो सुनाया हर सेकण्ड, हर संकल्प, हर आत्मा के सम्पर्क में सदा नये ते नया अर्थात् ऊँचे ते ऊँचा। नीचे की बात को न देखना है, न नीचे की स्टेज अपनानी है, सदा ऊँचा। ऊँचा बाप, ऊँचे बच्चे, ऊँची स्टेज और ऊँचे ते ऊँची सर्व की सेवा हो। यह प्रतिज्ञा का कंगन है।

साथ-साथ सर्व गुणों के श्रृंगार का बाक्स। वैरायटी सेट का श्रृंगार बाक्स। जिस समय जो श्रृंगार चाहिए उस समय वही सेट धारण कर सदा सजे-सजाये रहना। कभी सहनशीलता का सेट पहनना, लेकिन फुलसेट पहनना। सिर्फ एक सेट नहीं पहनना। कानों द्वारा भी सहनशीलता हो, हाथों द्वारा भी सहनशीलता का श्रृंगार हो। ऐसे समय-समय पर भिन्न-भिन्न श्रृंगार करते हुए विश्व के आगे फरिश्ते रूप और देव रूप में प्रख्यात हो जायेंगे। यह त्रिमूर्ति सौगात सदा साथ रखना।

फ्रेंडशिप निभाने तो आती है ना! डबल विदेशी फ्रेंड्स तो बहुत अच्छे बनाते हैं लेकिन अविनाशी फ्रेंडशिप रखना! डबल विदेशी छोड़ने में भी होशियार हैं, करने में भी होशियार हैं। अभी अभी हैं और अभी अभी नहीं, ऐसे तो नहीं करेंगे ना? बापदादा डबल विदेशी बच्चों को देख हर्षित होते हैं, कैसे चारों कोनों से इशारा मिलते पुरानी पहचान कर ली। बाप ने बच्चों को ढूंढा और बच्चों ने पहचान लिया। इसी विशेषता को देख बापदादा भी बधाई देते है। बापदादा का बहुत समय का आह्वान साकार स्वरूप में दिखाई दे रहा है। इसलिए सदा मायाजीत रहो। अच्छा –

ऐसे सिकीलधे बच्चों को, अविनाशी प्रीत की रीति निभाने वाले अविनाशी फ्रेंड्स को सदा फूलों के बगीचे में हाथ में हाथ दे साथी बन सैर करने वाले, सदा गाडली गोल्डन गिफट को कार्य में लाने वाले, सदा सम्पन्न, सदा मास्टर दाता, सर्व के मास्टर भाग्य विधाता ऐसे स्नेही सहयोगी चारों ओर के बच्चों को, साकारी वा आकारी रूपधारी बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।"

विदेशी टीचर्स से :- "निमित्त शिक्षक को देख बापदादा अति हर्षित हो रहे हैं। कितनी लगन से, स्नेह से अपने अपने स्थान पर रहते सभी सदा शक्ति स्वरूप स्थिति में स्थित हो सर्व शक्तियों का अनुभव कराते रहते हैं! अभी साधारण नारी वा कुमारी का रूप नहीं लेकिन सर्व श्रेष्ठ सेवाधारी आत्मायें! बापदादा शोकेस के शोपीस हो। आप सबको देख सर्व आत्मायें बाप को पहचानती हैं। हरेक निमित्त शिक्षक के ऊपर विश्व परिवर्तन की जिम्मेवारी है। बेहद के सेवाधारी हो - ऐसे अपने को समझती हो? एक एरिया के कल्याणकारी तो नहीं समझती? चाहे एक स्थान पर बैठे हो लेकिन हो तो 'लाइट हाउस' ना। चारों ओर लाइट देने वाले। तो छोटा सा बल्ब बनकर एक ही स्थान पर रोशनी देते या लाइट हाउस बन विश्व को रोशनी देते? लाइट हो, सर्चलाइट हो या लाइट हाउस हो? हिम्मत तो बहुत अच्छी रखी है। बहुत अच्छा कर रहे हो और आगे भी अच्छे ते अच्छा करते रहो। टीचर्स तो सदा मायाजीत है ना? अगर टीचर्स के पास माया आयेगी तो स्टूडेन्ट का क्या हाल होगा? आपके पास यदि एक बार माया आयेगी तो उनके पास 10 बार आयेगी। इसलिए टीचर्स के पास माया नमस्ते करने आवे, वैसे नहीं।

निमित्त शिक्षक का स्वरूप - सदा हर्षित, सदा मास्टर सर्वशक्तिवान - ऐसी सीट पर सदा सेट रहो। टीचर्स के रहने का स्थान ही 'ऊँची स्थिति' है। सेन्टर पर नहीं रहती हो लेकिन ऊँची स्टेज पर रहती हो। ऊँची स्टेज अर्थात् दिलतख्त पर माया आ नहीं सकती। नीचे उतरे तो माया आयेगी। पाण्डव भी बापदादा के सहयोगी राइट हैण्ड हो ना! गद्दी सम्भालने वाले को राइट हैण्ड कहा जाता है। सभी पाण्डव विजयी हो ना! अभी तक माया से बहुत समय खेल खेला। अभी विदाई दो। आज से सदा के लिए विदाई की बधाई मनाना। बहुत अच्छा चान्स मिला है और चान्स ले भी रहे हो। अच्छा –

(पार्टियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात)

बापदादा हर एक बच्चे के भाग्य को देख हर्षित होते हैं। हरेक बच्चा अपना भाग्य ले रहा है। संगम पर हरेक आत्मा का भाग्य अपना-अपना है। और हरेक का श्रेष्ठ भाग्य है। क्यों? क्योंकि जब श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बाप के बच्चे बने तो श्रेष्ठ भाग्य हो गया ना। न इससे कोई बाप श्रेष्ठ है, न इससे कोई भाग्य श्रेष्ठ है। ऊँचे ते ऊँचा बाप। यही याद रहता है ना! भाग्य विधाता मेरा बाप है। इससे बड़ा नशा और क्या हो सकता है। लौकिक रीति से बच्चे को नशा रहता - मेरा बाप इन्जीनियर है, डाक्टर है, जज है या प्राइम मिनिस्टर है। लेकिन आपको नशा है कि हमारा बाप 'भाग्यविधाता' है। ऊँचे ते ऊँचा भगवान है। यही नशा सदा रहता है या कभी कभी भूल जाते हो? भाग्य को भूला तो क्या होगा? फिर भाग्य कोपाने का प्रयत्न करना पड़ेगा। खोई हुई चीज को पा ने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। बाप ने आकर मेहनत से बचाया। आधाकल्प मेहनत की, व्यवहार में भी मेहनत, भक्ति में, धर्म के क्षेत्र में, सब में मेहनत ही की। और अभी सभी मेहनत से छूट गये। अभी व्यवहार भी परमार्थ के आधार पर सहज हो जाता है। निमित्त मात्र कर रहे हैं। निमित्त मात्र करने वाले को सदा सहज अनुभव होगा। व्यवहार नहीं है लेकिन खेल है। माया का तूफान नहीं लेकिन यह ड्रामा अनुसार आगे बढ़ने का तोफा है। तो मेहनत छूट गई ना! तोफा अर्थात् सौगात लेने में मेहनत नहीं होती है ना। तो ऐसे मेहनत से अपने को बचाने वाले, सदा भाग्य विधाता के साथ मास्टर भाग्य विधाता बन रहने वाले, इसको कहा जाता है - श्रेष्ठ आत्मा।

सैन्टानियो:- सभी अपने को विशेष आत्मा समझते हो? किस स्थान पर पहुँचे हो? सोचो कि ऐसा भाग्य विश्व में कितनी आत्माओं का होगा जो सम्मुख मिलन मनायें? इससे बड़ा भाग्य और क्या चाहिए? सदा अपने इसी भाग्य को स्मृति में रखो तो आपके भाग्य की प्राप्ति की खुशी को देख और आपके समीप आयेंगे। और अपना भाग्य बनायेंगे। सदा खुश रहो। बाप के बच्चे बने तो वर्से में क्या मिला? खुशी मिली ना! तो इस वर्से को सदा साथ रखना, छोड़कर नहीं जाना। खुशी के खजानों के मालिक बन गये। तो सदा खुशी में उड़ते रहना। इसमें ट्राई करने की बातें नहीं। अगर कहते ट्राई तो क्राई होते रहेंगे। क्या बच्चा बनने मे भी ट्राई करनी होती है? तो न ट्राई, न क्राई। ट्राई करेंगे, यह शब्द यहाँ छोड़कर जाना। बाप और वर्सा सदा साथ रहे। कम्बाइन्ड रहना। तो जहाँ बाप है वहाँ सर्व खजाने स्वत: ही होंगे। यही एक बात सदा याद रखना - कि बाप हमारे साथ है। 'वर्सा हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है'।

नर्व वर्ष की मुबारक (रात्रि 12 बजे)

नये वर्ष की सभी बच्चों को सारे वर्ष के लिए बधाई हो। ऐसे अमूल्य रत्न जिन्होंने बाप को पहचाना और बाप को प्रत्यक्ष करने की जिम्मेवारी का ताज धारण किया, ऐसे सदा सेवाधारी अनन्य ताजधारी, तख्तनशीन बच्चों को अपने अपने नाम सहित बधाई स्वीकार हो।

लंदन निवासी निमित्त जनक बेटी, और साथ-साथ आदि रत्न रजनी बच्ची, साथ में मुरली बच्चा और सबसे अति स्नेही छोटी समान-बाप जयन्ती बच्ची को और जो साथ साथ बच्चे सेवा पर उपस्थित है जैसे बृजरानी अच्छा अपना शो दिखा रही हैं, जो सेवा कर रहे हैं उस सेवा में रूहानियत भरी हुई है - ऐसे सभी बच्चे अपने अपने नाम से बधाई स्वीकार करें।

नया वर्ष, नया उमंग, नया उत्साह और इस वर्ष में सदा ही रोज उत्सव समझकर उत्साह दिलाते रहना। इसी सेवा में सदा तत्पर रहना। अच्छा - सभी बच्चों को बापदादा की दिल व जान, सिक व प्रेम से यादप्यार।

ओमशान्ति